शाहजहाँ का वो खौफनाक सच: जब अमर सिंह की कटार के डर से मुगल बादशाह को जनाना हरम में छिपना पड़ा!

भारतीय इतिहास के पन्नों में मुगलों के वैभव, विशाल सेनाओं और भव्य महलों के किस्से भरे पड़े हैं। लेकिन इसी इतिहास में कुछ ऐसी खौफनाक और रोंगटे खड़े कर देने वाली घटनाएँ भी दर्ज हैं, जो मुगल सल्तनत के अहंकार को चकनाचूर कर देती हैं।

ऐसी ही एक ऐतिहासिक घटना घटी थी **25 जुलाई 1644** को, आगरा के लाल किले में। यह वही दिन था जब मारवाड़ (नागौर) के वीर राजपूत योद्धा **अमर सिंह राठौड़** की मात्र 2 सेर की कटार ने पूरे मुगल दरबार में तांडव मचा दिया था। यह घटना इतनी भयानक थी कि 52 वर्षीय मुगल बादशाह शाहजहाँ को अपनी जान बचाने के लिए रानियों के जनाना महल (हरम) में भागकर दरवाजे बंद करने पड़े थे।

1. कौन थे अमर सिंह राठौड़?

अमर सिंह राठौड़, मारवाड़ (जोधपुर) के महाराजा गजसिंह के सबसे बड़े (ज्येष्ठ) पुत्र थे। वे स्वभाव से बेबाक, निडर और अत्यंत स्वाभिमानी योद्धा थे। उनकी इसी बेबाकी के कारण उनके पिता ने उन्हें गद्दी से वंचित कर दिया और छोटे भाई जसवंत सिंह को मारवाड़ का राजा बना दिया। इसके बाद अमर सिंह आगरा आ गए। शाहजहाँ उनकी बहादुरी से अच्छी तरह वाकिफ था, इसलिए उसने उन्हें **नागौर की स्वतंत्र जागीर** और मुगल दरबार में उच्च मनसब दिया। लेकिन अमर सिंह का असूल साफ था—*वे सम्मान दे सकते थे, लेकिन अपमान कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे।*

(By Govind Malviya)

29th July 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY)

2. विवाद की शुरुआत: 'मटीरे की राड़' और जुर्माना

सन् 1644 में नागौर और बीकानेर की सीमा पर उगे एक 'मटीरे' (तरबूज) को लेकर दोनों रियासतों के बीच युद्ध हो गया, जिसे इतिहास में "**मटीरे री राड़**" कहा जाता है। इस युद्ध और शिकार के सिलसिले में अमर सिंह राठौड़ बिना मुगल दरबार को बताए कुछ दिनों के लिए गैर-हाजिर रहे। जब वे वापस आए, तो शाहजहाँ के अभिमानी मीर बख्शी (सेनापति) **सलाबत खान** ने उन पर भारी जुर्माना ठोक दिया और रकम वसूलने के लिए संदेश भेजा।

अमर सिंह ने साफ शब्दों में जवाब भिजवाया:

"मेरी संपत्ति मेरी तलवार है। जुर्माना वसूलना है, तो आकर मेरी तलवार की धार से ले लो!"

3. 25 जुलाई 1644: आगरा किले का वो खौफनाक मंज़र

शाहजहाँ ने अमर सिंह को जवाब देने के लिए आगरा किले के दीवान-ए-खास में तलब किया। अमर सिंह निर्भीक होकर दरबार में दाखिल हुए। उनकी कमर में उनकी प्रसिद्ध दोधारी कटार (जमधर) लटक रही थी।

दरबार में शाहजहाँ के पास खड़े सलाबत खान का अहंकार चरम पर था। अमर सिंह को देखते ही सलाबत खान ने गुस्से में उंगली उठाई और चिल्लाकर उन्हें अपमानित करने की कोशिश की।

सलाबत खान के मुँह से सिर्फ निकला: "**गं...**" (वह अमर सिंह को *'गंवार'* कहना चाहता था)।

लेकिन उसके मुँह से '**वार**' शब्द पूरा बाहर निकलता, उससे पहले अमर सिंह की भारी कटार सलाबत खान की ठोड़ी को चीरती हुई उसकी गर्दन और सीने के पार हो चुकी थी!

- **प्रहार का वेग:** सलाबत खान का लोहे का कवच भी इस हमले को नहीं रोक सका।
- **समय:** मात्र 3 सेकंड में शाहजहाँ का मीर बख्शी अपने ही खून से लथपथ होकर तख्त के ठीक आगे ढेर हो गया।

(By Govind Malviya)

29th July 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY)

4. शाहजहाँ का खौफ: औरतों के बीच पलायन

अपनी आँखों के सामने अपने सबसे शक्तिशाली वज़ीर का यह खौफनाक कत्ल देखकर और अमर सिंह का रौद्र रूप देखकर शाहजहाँ बुरी तरह कांप उठा। शाहजहाँ को लगा कि अमर सिंह की अगली कटार उसके सीने में होगी। बादशाह तुरंत अपने तख्त से उठा और दरबार के पीछे बने **जनाना महल (रानियों के हरम)** की तरफ भागा। उसने अंदर घुसकर लोहे के भारी दरवाजे बंद कर लिए और कुंडी लगा ली। मुगलों के आधिकारिक इतिहास में यह दर्ज है कि उस दिन शहंशाह को औरतों के बीच छिपकर जान बचानी पड़ी थी।

5. अकेला योद्धा, तांडव और 70 फीट ऊंची छलांग

शाहजहाँ के छिपने के बाद अमर सिंह ने पूरे मुगल दरबार में अकेले ही तबाही मचा दी। जो भी मुगल सैनिक आगे आया, अमर सिंह की तलवार ने उसे काट फेंका। दर्जनों सैनिकों को मौत के घाट उतारने के बाद, अमर सिंह दौड़कर किले के प्रांगण में खड़े अपने वफादार घोड़े '**बादल**' पर सवार हुए।

मुगलों ने किले के सारे मुख्य दरवाजे बंद कर दिए थे। अमर सिंह ने अपने घोड़े बादल को इशारा किया और वीर बादल ने आगरा किले की **70 फीट ऊँची दीवार से सीधे खाई में छलांग लगा दी!**

- घोड़ा नीचे गिरते ही वीरगति को प्राप्त हो गया, लेकिन उसने अपने स्वामी की जान बचा ली।
- आज भी आगरा किले के उस ऐतिहासिक दरवाजे को "**अमर सिंह दरवाज़ा**" कहा जाता है।

6. गद्दारी और अमर सिंह का बलिदान

अमर सिंह को आमने-सामने की जंग में मारना मुगलों के बस की बात नहीं थी। इसलिए शाहजहाँ ने छलावा रचा। उसने अमर सिंह के सगे साले **अर्जुन सिंह गौड़** को बड़ी जागीर का लालच देकर अपनी तरफ मिला लिया।

अर्जुन गौड़ ने अमर सिंह को झूठी संधि का झांसा देकर वापस बुलाया। वह अमर सिंह को किले के एक बेहद **छोटे दरवाज़े (बारी/खिड़की)** से अंदर ले गया। जैसे ही अमर सिंह झुककर उस छोटे दरवाजे से अंदर दाखिल होने लगे, **घात लगाकर बैठे अर्जुन गौड़ और उसके साथियों ने पीछे से निहत्थे अमर सिंह पर धोखे से हमला कर दिया।** इस तरह भारत के एक महान वीर का अंत युद्धभूमि में नहीं, बल्कि अपनों की गद्दारी से हुआ।

(By Govind Malviya)

29th July 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY)

📚 Primary Books & References (Short):

1. **पादशाहनामा (अब्दुल हमीद लाहौरी):** भाग 2, पृष्ठ 380-384
2. **जोधपुर राज्य का इतिहास (डॉ. जी.एच. ओझा):** भाग 1, पृष्ठ 422-428
3. **मुहणौत नैणसी री ख्यात (बद्रीप्रसाद साकरिया):** भाग 2, पृष्ठ 165-170
4. **शाहजहाँनामा (इनायत खान - A.R. Fuller/Begley):** पृष्ठ 316-318

डिस्क्लेमर: यह सामग्री प्रमुख ऐतिहासिक शोध सामग्री पर आधारित है, जिसका उद्देश्य किसी भी व्यक्ति (जीवित/मृत), समुदाय या संप्रदाय की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं है, दर्शक अपने विवेक का प्रयोग करके देखें।

(By Govind Malviya)

29th July 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY)